23.7.20

## वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त
## (The Marginal Productivity Theory of Distribution)

इस सिद्धान्त के अनुसार एक साधन का पुरस्कार उसके सीमान्त उत्पादन के बराबर होता है। सीमान्त उत्पादन जिसे सीमान्त भौतिक उत्पादन भी कहते हैं; कुल उत्पादन में वह वृद्धि है जो साधन की एक अतिरिक्त इकाई लगाने से होती है; जबकि अन्य सब साधन स्थिर रहें। यदि उत्पादन की इस वृद्धि को वस्तु की वर्तमान कीमत से गुणा कर दिया जाए तो उस साधन का सीमान्त मूल्य उत्पाद (marginal value product-MVP) निकल आता है। परन्तु प्रो० मैकलप (Prof. Machlup) का कहना है कि "साधनों की इकाइयों को उनके मार्किट मूल्य के रूप में मापने से सीमान्त उत्पादकता विश्लेषण बिलकुल व्यर्थ बन जाता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वितरण सिद्धान्त का भाग होने के नाते सीमान्त उत्पादकता विश्लेषण का काम साधनों या सेवाओं के मार्किट मूल्यों की व्याख्या करना है। मार्किट मूल्यों के रूप में इन सेवाओं की परिभाषा देना उनकी व्याख्या करने के समान है।" इसलिए, अच्छा यह है कि एक साधन के सीमान्त उत्पादन को उसके सीमान्त आगम उत्पाद (marginal revenue product-MRP) के रूप में मापा जाए जिसकी परिभाषा यों दी जा सकती है कि सीमान्त आगम उत्पाद वह वृद्धि है, जो उत्पादन के एक साधन की एक और इकाई लगाने से कुल आगम में होती है; जबकि अन्य साधन ~~अपरिवर्तित~~ अपरिवर्तित रहें।

सामान्य नियम है कि एक साधन की सीमान्त आगम उत्पादकता उस साधन सेवा की इकाइयों में वृद्धि के साथ घट जाती है। शुरू-शुरू की अवस्थाओं में जब अन्य साधनों को स्थिर रखते हुए एक परिवर्ती साधन की इकाइयाँ काम पर लग जाती हैं, तो कुछ समय के लिए कुल आगम उत्पाद (total revenue product) में आनुपातिकता से अधिक वृद्धि हो सकती है। परन्तु एक समय आएगा, जब सीमान्त आगम उत्पाद घटना शुरू करेगा और अन्त में उस साधन सेवा की कीमत के बराबर हो जाएगा। घटते MRP की यह प्रवृत्ति हमें परिवर्तनशील अनुपातों के ~~विक्रम~~ नियम (Law of variable proportions) से प्राप्त होती है।

पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत कार्य करने वाली फर्म को, किसी एक साधन विशेष की एक इकाई की कीमत (पुरस्कार) उतनी ही देनी पड़ती है जितनी कि ~~उद्योम~~ उद्योग देता है। अधिकतम लाभ प्राप्ति के लिए, फर्म

स्थानापन्नता के नियम पर चलती है। सस्ती साधन सेवाएँ मँहगी साधन सेवाओं को हटाने का प्रयत्न करती हैं। उदाहरण के लिए यदि फर्म देखती है कि मशीनों को मँहगे श्रम के स्थान पर स्थानापन्न करना अधिक लाभदायक है, तो वह ऐसा कर देगी। मँहगे साधनों के स्थान पर सस्ते साधनों की स्थानापन्नता तब तक चलती रहेगी, जब तक कि प्रत्येक साधन की सीमान्त आगम उत्पादकता उस साधन की कीमत के बराबर नहीं हो जाती। इस स्टेज पर उत्पादन के साधनों को उनके दक्षतम संयोग (most efficient combination) अथवा न्यूनतम लागत संयोग में काम पर लगाया जाता है और फर्म को अधिकतम लाभ प्राप्त होते हैं।

इसलिए यह जरूरी है कि संतुलन में, एक साधन सेवा की कीमत उसकी अपनी सीमान्त आगम उत्पादकता के बराबर होगी। यदि एक साधन इकाई का सीमान्त आगम उत्पाद उसकी कीमत (उसे काम पर लगाने की लागत) से अधिक हो, तो फर्म के लिए उस साधन की और इकाइयों को लगाना लाभदायक होगा। ज्यों-ज्यों अधिक इकाइयाँ लगाई जाती हैं, त्यों-त्यों सीमान्त आगम उत्पाद घटता जाता है, क्योंकि जब तक कि वह कीमत के बराबर नहीं हो जाता। फर्म के लिए यह अधिकतम लाभ का बिन्दु है। परन्तु यदि इस बिन्दु के बाद और इकाइयाँ लगाई जाएँ, तो सीमान्त आगम उत्पाद उसकी कीमत से कम हो जाएगा और फर्म को हानि उठानी पड़ेगी। (आनुपातिक प्रतिफल के नियम की व्यावहारिकता से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है)

फिर, एक ही साधन-सेवा की भिन्न-भिन्न इकाइयों में भी स्थानपन्नता होती है। साधन मार्किट में पूर्ण गतिशीलता होने के कारण एक साधन सेवा की इकाइयाँ उस प्रयोग से, जहाँ उनकी सीमान्त आगम उत्पादकता कम है, दूसरे उद्योग में जहाँ वह उत्पादकता अधिक हो जाने का प्रयत्न करती रहती हैं, जब तक कि भिन्न-भिन्न प्रयोगों में सब इकाइयों की सीमान्त आगम उत्पादकता समान नहीं हो जाती।

पर अन्तिम विश्लेषण में, यह जरूरी है कि एक साधन इकाई की कीमत उसकी सीमान्त तथा औसत आगम उत्पादकता दोनों में से प्रत्येक के समान हो। यदि किसी भी समय एक साधन इकाई की कीमत उसकी औसत आगम उत्पादकता से अधिक हो, तो फर्मों को हानि होगी। परिणाम यह होगा कि कुछ फर्में उद्योग को छोड़ जाएँगी और, उससे साधन-सेवा की कीमत गिर कर अधिक अधिकतम औसत आगम उत्पादकता के स्तर पर आ जाएगी।

Scanned by CamScanner

इसके विपरीत, यदि कीमत औसत आगम उत्पादकता से कम हो जाएँ तो फर्में अधिक लाभ प्राप्त करेंगी। इन अधिक लाभों से आकर्षित होकर नई फर्में उद्योग में प्रवेश कर इस साधन-सेवा के लिए मुकाबले पर आ जाएँगी। यह कीमत को ऊपर की ओर औसत आगम उत्पादकता के स्तर तक धकेल देंगी। अल्पकालीन में इस संतुलन से भिन्न स्थिति हो सकती है परन्तु दीर्घकालीन में, एक साधन सेवा की कीमत उसकी सीमान्त और औसत-आगम उत्पादकता के बराबर होगी। (चित्र-1)

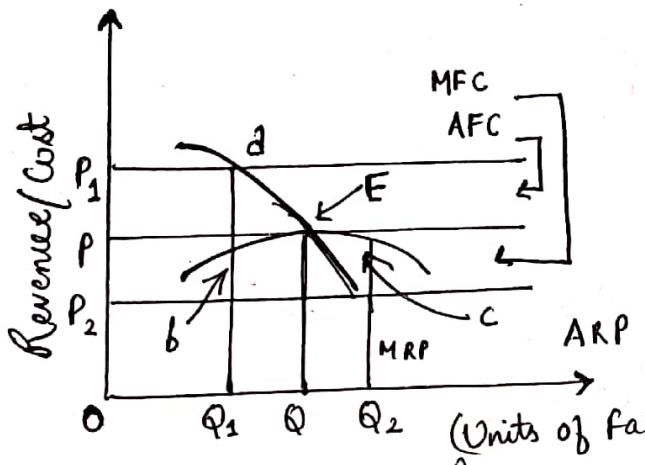


बिन्दु E पर, ARP वक्र MRP वक्र के बराबर है और दोनों, साधन सेवा के औसत लागत और सीमान्त लागत के बराबर है। इसलिए प्रत्येक साधन-सेवा को OQ इकाइयों के लिए OP कीमत दी जाएगी। मान लीजिए कि साधन-कीमत बढ़कर $OP_1$ हो जाती है। इस कीमत पर फर्म को प्रति इकाई ab हानि होगी क्योंकि साधन इकाइयों की उनकी औसत आगम उत्पादकता (ARP) से अधिक कीमत दी जा रही है। इससे कुछ फर्में उद्योग को छोड़ जाएँगी और साधन कीमत गिरकर फिर E बिन्दु पर आ जाएगी। दूसरी ओर, यदि साधन कीमत गिरकर $OP_2$ पर आ जाए; तो फर्मों को प्रति इकाई dc लाभ प्राप्त होगा। जब इस लाभ से आकर्षित होकर नई फर्में उद्योग में आएँगी, तो कीमत फिर बढ़कर OP पर चली जाएँगी। ये कीमत परिवर्तन केवल अल्पकालीन में ही सम्भव है। दीर्घकालीन में, संतुलन स्थिति E बनी रहेगी।

Scanned by CamScanner